महाकुंभ 2025 में मची भगदड़

चर्चा में क्यों?

प्रयागराज में **त्रिवेणी संगम** (गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम) पर उस समय दुखद भगदड़ मच गई, जब हज़ारों श्रद्धालु **महाकुंभ** में **मौनी अमावस्या** '**अमृत स्नान**' के लिये एकत्र हुए थे।

- भारी भीड़ के कारण **हालात बिगड़ गए** और **भगदड़ मच गई,** जिससे कई **लोगों की जान** चली गई और **कई घायल** हो गए।

मुख्य बिंदु

- **अमृत स्नान का महत्त्व:**
  - **मौनी अमावस्या पर अमृत स्नान** महाकुंभ 2025 का सबसे महत्त्वपूर्ण अनुष्ठान है तथा यह आयोजन **'त्रिवेणी योग' के दुर्लभ खगोलीय संरेखण के कारण और भी अधिक महत्त्वपूर्ण है,** जो प्रत्येक **144 वर्षों में एक बार होता है।**
  - अमृत स्नान से एक दिन पहले ही करीब **पाँच करोड़ श्रद्धालु पहुँच चुके थे और संभावना है कि** उसी दिन यह संख्या **10 करोड़** तक पहुँच जाएगी।
- **मौनी अमावस्या:**
  - **परिचय:**
    - **मौनी अमावस्या, जिसे माघी अमावस्या** या **माघ अमावस्या** के नाम से भी जाना जाता है, एक महत्त्वपूर्ण दिन है जो **माघ महीने के दौरान अमावस्या (अमावस्या)** पर आता है।
    - आध्यात्मिक रूप से महत्त्वपूर्ण यह दिन उत्तर भारतीय कैलेंडर की परंपराओं में गहराई से निहित है।
    - यह पवित्र अनुष्ठानों के माध्यम से **आत्मनिरीक्षण, मौन** और **आत्मा शुद्धि** द्वारा चिह्नित है, जिसमें **गंगा नदी** में **पवित्र स्नान** इसकी सबसे प्रमुख प्रथाओं में से एक है।
  - **मौनी अमावस्या 2025 का महत्त्व:**
    - **मौनी शब्द संस्कृत शब्द** "**मौन**" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "**चुप्पी या न बोलने की स्थिति**"।
    - इस दिन मौन व्रत रखना भक्तों के बीच एक आम प्रथा है, जो **आध्यात्मिक अनुशासन** और **आंतरिक शांति को बढ़ावा देती है।**
    - **मौन को आत्म-शुद्धिकरण** और **आध्यात्मिक विकास** हेतु एक शक्तिशाली साधन माना जाता है।
    - **ऐसा माना जाता है कि कुंभ मेले** के दौरान **त्रिवेणी संगम** में **पवित्र डुबकी लगाने** से भक्तों के पाप धुल जाते हैं और वे **मोक्ष** की ओर अग्रसर होते हैं।
    - इसके अतिरिक्त, **मौनी अमावस्या** पर **पूर्वजों के सम्मान** हेतु अनुष्ठान करने से खुशी और आशीर्वाद प्राप्त होता है, साथ ही **पितृ दोष** को कम करने में सहायता मिलती है, जिससे पैतृक कर्म असंतुलन का सामना करने वालों को राहत मिलती है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/stampede-at-maha-kumbh-2025